कौशिक गोत्रस्य वृत्तान्तम्।

श्री मन्महोदय राजा गाधि के पुत्र विश्वामित्र (कौशिक) जिन्होंने तपोबल द्वारा राजर्षि ब्रह्मर्षि पद प्राप्त किया था उन्हीं के कुल में देवकीनन्द नामक पण्डित दो वेद के ज्ञाता हुए और भदेसी ग्राम में ब्राह्मणों के द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ कराया ब्रह्म भोज किया तब ब्राह्मणों ने आनन्द पूर्वक अवस्थी यह उपाधि दे यह आशीर्वाद दिया भो विप्रवर पुत्रवान् भव तब से देवकीनन्द जी भदेसी के अवस्थी कहाये तिन्हीं के १ पुत्र शोभाराम भदेसी के अवस्थी कहाये शोभाराम के २ पुत्र १ बैजनाथ पिहानी के अवस्थी, २ विश्वम्भर मुर्चापुर के अवस्थी, विश्वम्भर के २ पुत्र १ चिन्तामणि इटावा के त्रिगुणायत, २ रतिनाथ कंपिला त्रिगुणायत, चिन्तामणि के ३ पुत्र १ किशोर कलिङ्ग के मिश्र, २ गोपी बहरामपुर के मिश्र, गदाधर संकेतपुर के मिश्र कहाये, बैजनाथ के ५ पुत्र १ गिरजापति ऐंठाने के तिवारी, २ बलदेव जिलहू के तिवारी, ३ द्वारिका कपूरथला के पाठक कुब्जू कलिङ्ग के दीक्षित,

नाशकेत इटावा के दुबे कहाये, तिनके पुत्र भगोले शिवराजपुर के दुबे कहाये।

कौशिक गोत्र अवस्थी मिश्र दुबे तिवारी दीक्षित त्रिगुणायत अग्निहोत्री पाठकों का स्थान असामी विस्वा

स्थान असामी	विस्वा.	स्थान असामी	विस्वा
अवस्थी मदेसी देवकीनंद	३	बिलहू के बलदेव	२
" " शोभाराम	२	दीक्षित कलिंग के कुंज	१
पिहानी के बैजनाथ	"	त्रिगुणायत इटावा के चिंतामणि	३
मुर्वापुर के विश्वम्भर	"	कपिला के रतिनाथ	३
मिश्र कलिंग के किशोर	३	अग्निहोत्री ख्यूरा के	१
बहिरामपुर के गोपी	१	राउत सुवाकर के	१
संकेतपुर के गदाधर	३	पाठक पूरथलाके द्वारिका	१
दुबे इटावा के नाशकेत	१	❀ इति कौशिक गोत्रम् ❀	
शिवराजपुर के भगोले	३		
तिवारी ऐंठाने के गिरजापती	२		

पाराशर गोत्रस्य वृत्तांतम्

श्री महर्षि पाराशर जी के कुल में शक्तिधर नामक पंडित परम तेजस्वी भये और नागपुरी पाराशरी दुबे कहलाये, तिन्हीं शक्तिधर के १